शिक्षा योजना

इस योजना का उद्देश्य शिक्षा का मानवीयकरण करना है. शिक्षा को मानवीय करण करने के लिए प्रेरित परिस्थितियों, स्थिति, आवश्यकता एवं उसके संभावना व स्रोत को विवेचित किया गया है तथा उसका संक्षिप्त स्वरूप प्रस्तावित है।

परिस्थिति

शिक्षा को मानवीय करण करने के लिए प्रेरित परिस्थितियों निम्न हैं।

- वर्तमान शिक्षा का यांत्रिक होना एवं उसके क्रम मे मनुष्य के लिए दिशा का स्पष्ट न होना
- प्रचार प्रसार व प्रदर्शन के द्वारा अपराध और शृंगारिकता को सामान्य जन मानस तक पहुँचने का प्रयास करना।
- व्यवस्था तंत्र का भय व प्रलोभन पर आधारित होना।
- मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक आचरणों मे अन्तर्विरोध होना फलतः औसत मनुष्य का निश्चित स्वरूप न होना

उपर्युक्त यथास्थिति के फलस्वरूप प्रबुद्धता मे विश्वास रखने वाले प्रत्येक मनुष्य इन परिस्थितियों से उबरना चाहता है। जिसके लिए विकल्प की आवश्यकता उत्पन्न हो चुकी है। इस मुद्दे पर लोक मानस प्रबुद्ध जनमानस, राष्ट्र मानस, शिक्षा मानस एवं व्यवस्था मानस का सर्वेक्षण किया गया है और किया जा सकता है जिससे यह स्पष्ट हुआ है कि इन सब परिस्थितियों के मूल मे भौतिक तथा अधिभौतिक वादों के बीच अन्तर्विरोध ही प्रधान कारण है। क्योंकि अधिभौतिक वाद के अनुसार चेतना से पदार्थ तथा भौतिक वाद के अनुसार पदार्थ से चेतना का क्रमशः उत्पन्न व निष्पन्न होता है; जो कि न तो प्रमाणित है और न ही वर्तमान।

शिक्षा मे वस्तु का स्वरुप

- जीवन विद्या
- वस्तु विद्या

जीवन विद्या - प्रत्येक मनुष्य मे पायी जाने वाली आशा, विचार इच्छा संकल्प व अनुभव जैसी अक्षय शक्तियों का अध्ययन है। इसके लिए स्रोत जीवन ही है। जीवन एक विकास पूर्ण परमाणु है। परमाणु का गठन पूर्ण स्थिति मे होना नियति क्रम मे होने वाली एक अद्भुत घटना है। ऐसे जीवन मे उक्त पाँचो शक्तियों का प्रत्येक मनुष्य मे जीवन्तता एवं प्रभावशील कार्यशील एवं व्यवहारशील होना पाया जाता है। यही प्रत्येक मनुष्य के आचरण के मूल का सूत्र और व्याख्या का स्वरुप है।

- अनुभव (जागृति) एवं ही प्रत्येक मनुष्य व्यवस्था को पहचानता है, व्यवस्था वर्तमान मे विश्वास एवं भविष्य मे विश्वास की पूर्ण संभावना है
- वर्तमान मे विश्वास ही चरित्र (मानवीय आचरण) की क्रियान्वयन शक्ति है
- विश्वास पूर्ण कार्य योजना, आश्वासन पूर्ण योजनाओं का रहना प्रत्येक मनुष्य की अभीप्सा है, यही कार्यक्रम का आधार है।

जीवन विद्या व वस्तु विद्या का क्रियान्वयन स्वरुप

- विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन
- मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन
- दर्शन शास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन
- अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य के सदुपयोग एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का अध्ययन
- राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता का संरक्षण व संवर्धनात्मक नीति पक्ष का अध्ययन
- समाज शास्त्र के साथ मानव संस्कृति, सभ्यता विधि व्यवस्था मे सामरस्यात्मक नीति पक्ष का अध्ययन

स्थिति

शिक्षा को मानवीय करण करने के लिए प्रेरित स्थितियाँ निम्न हैं।

- स्थिति में व्यवस्था ही सार्वभौम लक्ष्य, कर्तव्य, दायित्व स्थिति व गति है।
- स्थिति में अस्तित्व ही संपूर्णभाव तथा व्यवस्था है।
- स्थिति में अस्तित्व ही विकास व्यवस्था है।
- स्थिति में अस्तित्व ही जीवन व्यवस्था है।
- स्थिति में अस्तित्व ही जीवन जागृति व्यवस्था है।
- स्थिति में अस्तित्व ही संपूर्ण रचनायें हैं।

व्यवस्था में जागृति क्रम ही शिष्टता है। व्यवस्था में जीने की कला विचार शैली व अनुभव बल की अभिव्यक्ति संप्रेषणा का वर्तमान स्वरुप शिक्षक है।

व्यवस्था :- अनुभव में, प्रामाणिकता → जानना + मानना
बौद्धिकता में, समाधान → संबंधों की पहचान व मूल्यों का निर्वाह
विवेचना में, विभव → वर्तमान में विश्वास व भविष्य में विश्वास की पूर्ण संभावना
विश्लेषण में, सह अस्तित्व → पूरकता + उदातीकरण

सम्भावना

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित संभावनायें निम्न हैं।-

- मनुष्य की समस्त अनुभूतियाँ उसके जागृति से सूचित हैं जिनकी अभिव्यक्ति संप्रेषणा व प्रकाशन का प्रयोजन व्यवस्था की भागीदारी मे ही प्रमाणित होता है क्योंकि इष्ट व्यवस्था ही है न कि अव्यवस्था। अस्तु जागृति, स्वसंस्कार बल और वातावरण के योगफल मे शिक्षा के मानवीयकरण पूर्वक सफल होने की पूर्ण संभावना है।
- मनुष्य की कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता क्रमशः समाधान व प्रामाणिकता मे तृप्त होती है। मनुष्य अपनी मौलिकता सहित विकास क्रम मे सुख की अभीप्सा से विभिन्न परस्परताओं मे क्रियाशील पाया जाता है। ये परस्परतायें मनुष्य-मनुष्य व मनुष्य-नैसर्गिक संबंधों के रूप मे प्रसिद्ध हैं, जिन्हें मनुष्य जीकर सहज रूप से पहचान व निर्वाह कर तृप्त होता है। अस्तु जीवन तृप्ति, विचार तृप्ति एवं व्यवहार तृप्ति के योगफल मे शिक्षा के मानवीयकरण पूर्वक सफल होने की पूर्ण संभावना है।
- मनुष्य जागृति पूर्वक अस्तित्व समग्र को सह अस्तित्व, अविभाज्य एवं नित्य अनुभव करता है। फलतः समाज की अखण्डता का अर्थ समाधान समृद्धि अभय तथा सह अस्तित्व के अविभाज्य स्वरूप की निरंतरता ही है। जिसका स्वरूप एक मनुष्य मे आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य क्षमता तथा वस्तु की सदुपयोगिता ही है। अस्तु अस्तित्व मे स्पष्ट एकता व उद्घाटीकरण सिद्धांतों के योगफल मे शिक्षा के मानवीयकरण पूर्वक सफल होने की पूर्ण संभावना है।
- मनुष्य व्यवस्था पूर्वक शुभाकांक्षी है। शुभ, न्याय सुलभता व विनिमय सुलभता के संयुक्त स्वरूप की क्रियाशीलता के रूप मे ख्यात है। न्याय संबंधों के निर्वाह पूर्वक तथा विनिमय, श्रम नियोजन पूर्वक है। अस्तु व्यवहार व व्यवसाय के योगफल मे शिक्षा के मानवीयकरण पूर्वक सफल होने की पूर्ण संभावना है।

आवश्यकता

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित आवश्यकतायें निम्न हैं।

- प्रत्येक मनुष्य मे पायी जाने वाली कल्पनाशीलता व कर्मस्वतंत्रता एवं अस्तित्व को अनजाने मे स्वीकारता ही है; इसीलिए प्रत्येक विद्यार्थी (व्यक्ति) का संपूर्ण अस्तित्व के प्रति निर्भ्रम होना एक आवश्यकता है
- मनुष्य जिन जिन संबधों मे प्रधानतः विश्वास का निर्वाह कर पाता है, उन्ही संबधो की परस्परता मे वह अपनी उपयोगिता व प्रयोजनीयता को आंकलित कर पाता है। इसी तथ्य के आधार पर मनुष्य के लिए अखण्ड समाज के अर्थ मे संबंधों को पहचानना व मूल्यों का निर्वाह करना एक अनिवार्य स्थिति है। अस्तु मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक व राज्यनैतिक व्यक्तित्व के लिए बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि एक आवश्यकता है
- प्रत्येक मनुष्य मे आकांक्षा उसकी स्वतंत्रता व स्वराज्य के रूप मे विद्यमान है, जिसे बहुआयामी अभिव्यक्ति शील मानव मे सफल बनाने के लिए संपूर्ण आयामों के सामरस्य सूत्र के प्रति जागृत होना एक आवश्यकता है
- प्रत्येक मनुष्य जन्म से न्याय का याचक है; सही करना चाहता है सत्य वक्ता है;

इसलिए विद्यार्थी (व्यक्ति) मे क्रमशः न्याय प्रदायी क्षमता सही कार्य करने की योग्यता व यथावत परम्परा को बनाये रखने की पात्रता को जागृत होना एक आवश्यकता है

स्रोत

अस्तित्व मे विकास, जीवन, जीवन जागृति और रचनाएँ नित्य वर्तमान हैं। विकास परमाणु का ही इतिहास है। परमाणु मे विकास होना पाया जाता है। इसलिए जीवन जागृति नियति क्रम की अभीप्सा है। नियति क्रम मे दो ही लक्ष्य स्पष्ट हुए हैं। विकास और जीवन जागृति। शरीर रचनाएँ और जीवन संयुक्त रूप मे जागृति क्रम में जीवावस्था से आरम्भ होकर मानव तो अपनी प्रामाणिकता के पद मे जागृति का अनुभव करता है। मानव अस्तित्व मे जड़ - चैतन्य प्रकृति के संयुक्त साकार रूप मे मिलता है। रचनाओं मे शरीर रचना श्रेष्ठ है उसमे भी मनुष्य शरीर रचना सर्वाधिक विकसित है। शरीर के द्वारा जीवन के प्रकाशित होने के क्रम मे शरीर मे जीवन्तता नियति सहज है। इसी क्रम मे जीवन तृप्ति कामनाओं का शरीर व्यापार से संबंधित होने की स्थिति मे मनुष्य को रुचिशील देखा जाता है। जब मनुष्य रुचिशील होता है तब जीवन तृप्तियों के स्रोतों से अछुता रह जाता है क्योंकि शरीर को ही जीवन मानने लगता है। रुचियों से घनीभूत हो जाता है। इन भ्रमित धारणाओं का समुचित निराकरण का स्रोत मूल्य मूलक एवं लक्ष्यमूलक प्रणालियों के रूप मे नित्य समीचीन है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन तृप्ति की कामना से संम्पन्न है। जीवन तृप्ति प्रामाणिकता व समाधान है। जीवन तृप्ति जीवन जागृति का साक्ष्य है। इसलिए जीवन जागृति स्रोत के रूप मे अस्तित्व मे है ही। इसलिए अस्तित्व ही स्रोत है।

प्रत्येक मनुष्य मे अव्यवस्था की सममु पीड़ा के रूप मे होना पाया जाता है ऐसी अव्यवस्था का बोध विकसित प्रकृति का अविकसित प्रकृति के सदृश्य कार्य व्यवहार विन्यास से होता है अस्तित्व स्वयं व्यवस्था का स्वरुप होने के कारण उसमे प्रत्येक इकाई का किसी न किसी पद मे होता ही है। वह उसी पद मे अपने त्व सहित व्यवस्था को स्पष्ट करता हुआ पाया जाता है। जैसे:- लौह, लौहत्व के साथ; दूब, दूबत्व के साथ; शाय, शायत्व के साथ

- साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन

पद्धति का स्वरुप :- प्रतिभा व व्यक्तित्व का संतुलित उदय
प्रणाली का स्वरुप :- विवेक व विज्ञान सम्मत शैली
नैतिकता का स्वरुप :- व्यवहार मे समाजिक व व्यवसाय मे स्वावलम्बी

उक्त सभी स्वरुपों का प्रधान लक्ष्य अस्तित्व मे जागृति एवं अनुभव करने योग्य एक मानव इकाई को सफल बना देना ही है। यही शिक्षा का प्रधान कर्तव्य है। जागृति क्रम मे प्रवर्तन का यही तात्पर्य है।

क्रियाकलाप

विश्लेषण स्वयं तर्क अवश्य होते हैं ये तात्विकता के बिना ध्रुवीकृत नहीं होते हैं इसलिए वर्तमान विज्ञान मानस, मानव के लिए अशरण सिद्ध हो चुका है। विवेक का कार्यकलाप विवेचनात्मक होता है। विवेचनायें तात्विकता की संगति को सूचित एवं व्याख्यायित करती है। इसी तथ्य वश विज्ञान का विवेक सम्मत होना एक अनिवार्य क्रियाकलाप है

शिक्षा के मानवीय करण का प्रयोजन

- शिक्षा विद्यार्थी एवं शिक्षक मे सामरस्यता स्थापित करना
- व्यक्ति मे स्वयं के प्रति विश्वास और श्रेष्ठता के प्रति सम्मान स्थापित करना
- व्यक्ति के व्यवहार मे सामाजिकता तथा व्यवसाय मे स्वावलम्बन योग्यता को स्थापित करना
- व्यक्ति मे विनिमय तथा न्याय सुलभता एवं स्वराज्य एवं स्वतंत्रता को अनुभव करने योग्य क्षमता को स्थापित करना

ए. नागराज शर्मा
प्रणेता - मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदान्चल
अमरकंटक. जिला शहडोल (म०प्र०)

मानव, मानत्व के साथ
व्यवस्था होना अस्तित्व सहज सत्य है। मानवत्व, स्वयं समाधान सम्पृक्ति, अभय व सह अस्तित्व की अविभाज्य अभिव्यक्ति ही है, जो नियति सहज स्रोत है
उक्त प्रकार के संपूर्ण स्रोत को वाङ्मय रूप मे अवतरित करने पर मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्व वाद) मानव को सहज सुलभ हुआ है। जिसके प्रणेता श्री ए. नागराज शर्मा, भक्तमाश्रम, नर्मदांचल अमरकंटक है।

संक्षिप्त स्वरूप

शिक्षा का मानवीय करण शिक्षित व्यक्ति मे मानवीय मूल्य चरित्र व नैतिकता की अविभाज्य अभिव्यक्ति संप्रेषणा और प्रकाशन के अर्थ मे है। जिसके धारक- वाहकता का दायित्व प्राथमिक रूप मे शिक्षक को ही है। शिक्षक शिक्षा के स्वरूप मे जीते हुए शिक्षा प्रदान करने के अर्थ मे शिक्षा का मानवीय करण करना अभीप्सित है।

शिक्षा मे व्यवसाय शिक्षा के साथ व्यवहार शिक्षा को प्रावधानित करना एक आवश्यकता है व्यवहार शिक्षा मानव संबंध को पहचानने और उसके निर्वाह के लिए है तथा व्यवसाय शिक्षा उत्पादन कार्यों मे परीक्षण विधि के विकास के लिए है
शिक्षा मे व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलित उदय होने की पद्धति को विकसित करना एक आवश्यकता है। शिक्षा मे विवेक व विज्ञान सम्मत प्रणाली को अपनाना भी एक आवश्यकता है।